आर0के0 कुँवर
निदेशक

माध्यमिक शिक्षा उत्तराखण्ड
ननूरखेड़ा, देहरादून
फोन नं0 0135–2781440
दिनांक : 26 जनवरी, 2015

संदेश

विद्यालयी शिक्षा परिवार के समस्त छात्र/छात्राओं, विद्वान शिक्षक/शिक्षिकाओं/शिक्षणेत्तर कर्मियों एव सम्मानित अभिभावकों को 66वें गणतंत्र दिवस की पावनबेला पर हार्दिक शुभकामनायें।

आज के दिन 26 जनवरी 1950 को हमारे विद्वान संविधान निर्माताओं द्वारा निर्मित भारतीय संविधान देश में लागू हुआ। संविधान निर्मात्री सभा द्वारा भारत के संघीय स्वरूप को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गंणराज्य के रूप में स्वीकार किया गया।

हमारे राष्ट्र की प्रमुख विशेषता "अनेकता में एकता" है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी ने कहा था कि हमारा राष्ट्र एक ऐसे हार (माला) की तरह है जिसमें पृथक–पृथक मोती पिरोये गये हैं। हम सभी धर्म जाति सम्प्रदाय,भाषा,क्षेत्र तथा वेशभूषा के साथ राष्ट्र के अभिन्न अंग हैं।

गणतंत्र दिवस के दिन प्रातः से ही देशवासियों के मन में उत्साह एवं उमंग स्वयमेव उत्पन हो जाती है। और देश प्रेम देश भक्ति के गीत हमें भारत का नागरिक होने पर गौरव का अहसास कराते हैं। " हम उस देश के वासी है जहॉ मन में सच्चाई रहती है/सारे जहॉ से अच्छा आदि गाने देश प्रेम की भावना को जागृत करने में विद्युत कम्पन का कार्य करते हैं। इन भावनाओं को हमें बहुत गम्भीरता से लेना होगा। मौलिक रूप से हम सभी देश के प्रति असीम प्रेम करते हैं। हमें धैर्य के साथ सोचना होगा कि हम अपने देश के विकास, समृद्धि एवं उन्नति के लिए क्या कर सकते हैं।

मेरा विश्वास है कि देश/प्रदेश/समाज ने हमें जो दायित्व सौंपा है। प्रथमतः हमें उसे पूर्ण जिम्मेदारी एवं लग्न के साथ निर्वहन करना है। हम सभी शिक्षा विभाग से जुडे हैं। यह हमारा सौभाग्य है। हमारे माता पिता एवं हमारे विद्वान गुरूजन यदि हमें शिक्षा एवं संस्कार नहीं देते तो क्या हम आज शिक्षा जैसे सम्मानित एवं पुनीत क्षेत्र से जुड़ सकते थे ? इस पर हम मनन करें।

लोकतंत्र में हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना चाहिए किन्तु इसका दूसरा पहलू भी है। क्या हम अपने कर्त्यब्यों का सम्यक निर्वहन कर रहे हैं? इस पर आत्म चिन्तन करना होगा। भारत के संविधान में निहित कर्तव्यों को इस अवसर पर आप से दुहराने का अनुरोध करूँगा।

भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्त्यव्य होगा कि संविधान का पालन करे और उनके आदर्शों,संस्थाओं,राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।

स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजाये रखें और उनका पालन करे।

भारत की प्रभुसत्ता,एकता और अखण्डता की रक्षा करना हमारा परम–पवित्र कर्तव्य है। देश की रक्षा करे और जब कभी राष्ट्र सेवा का आह्वान हो,तो राष्ट्र की सेवा के लिए तत्पर रहे।

भारत में धार्मिक,भाषायी,प्रादेशिक और वर्गीय विभिन्नताएं मौजूद हैं इसलिए विभिन्न समुदायों के बीच सामंजस्य और भ्रातृत्व बनाए रखना हमारा दायित्व है। हम उन प्रथाओं का बहिष्कार करें जो महिलाओं के सम्मान के विरूद्ध हैं। हम समन्वित संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझें और उनका परीक्षण करें।

प्राकृतिक पर्यावरण की,जिसके अर्न्तगत वन,झील,नदी और अन्य जीव भी हैं, की रक्षा एवं उनका संवर्धन करें तथा प्राणीमात्र के प्रति दया भाव रखें।

हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएं तथा 'मानववाद' और 'अन्वेषण व सुधार की भावना' का विकास करें। हम सभी सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करे और हिंसा से दूर रहे।

व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों से सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे,जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रगति और उपलब्धि की नवीन ऊंचाइयों को छू सके।

अन्त में इस पुनीत अवसर पर मैं आप सभी से अपेक्षा करता हूँ कि प्रदेश के बहुमुखी विकास में भावी नागरिकों की भूमिका को पहचानते हुए उनके शैक्षणिक उन्नयन हेतु अपना अभीष्ठ योगदान प्रदान करेंगे। इस अवसर पर राष्ट्रपति पुरस्कार एवं शैलेश मटियानी राज्य पुरस्कार से सम्मानित विद्वान शिक्षकों एवं कर्मठ कर्मियों द्वारा विभाग की जो मनोयोग से सेवा की जा रही है उसके लिए उन्हें साधुवाद देता हूँ। एक बार पुनः सभी को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

"जय भारत, जय उत्तराखण्ड"

26.01.2015

(आर0के0 कुँवर)
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा उत्तराखण्ड।